Juni Khyat
(UGC Care Group I Listed Journal)
ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० प्रतिभा सिंह
सहायक प्राध्यापक मनोविज्ञान विभाग
वीर कुंवर सिंह विष्वविद्यालय, आरा

सीमा कुमारी
षोध छात्रा ,मनोविज्ञान विभाग
वीर कुंवर सिंह विष्वविद्यालय, आरा

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन विष्वविद्यालय स्तर के खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिती का अवलोकन करने के लिए किया गया है। खेल एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। जो खिलाड़ियों की सोच, कल्पना ध्यान और एकाग्रता को विससित करने में सहायक होती है। खिलाड़ियों में एकाग्रता विकसित करने के लिए मानसिक अभ्यास, खेल के उद्देश्य एवं प्रयुक्त शारीरिक गतिविधियां यह निधारित करती है कि खिलाड़ियों में नियंत्रण की क्षमता और प्रतिस्पर्धा किय स्तर तक उनके व्यक्तित्व को निखारने में सहायक होती है। खेल मनोविज्ञान में प्रयुत्य षब्द मानसिक का तात्पर्य मनोवैज्ञानिक अनुषासनात्मक आधारों को इंगित करता है अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विष्वविद्यालय स्तर के खिलाड़ियों में नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालय से लिए गए हैं जो मुख्य रूप से क्रिकेट, फुटबॉल एवं खो–खो खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का मापन करना है उसके लिए 200 खिलाड़ी छात्र–छात्राएं और 200 गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राएं वीर कुंवर सिंह विष्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालय से लिए गए है जो मुख्य रूप से क्रिकेट फुटबॉल एवं खो–खो जैसे सामूहिक खेल खेलते थे और साथ ही गैर खिलाड़ी छात्र छात्राएं प्रतिदर्ष के रूप में चयनित किए गए हैं जो किसी भी प्रकार का खेल नहीं खेलते थे। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य देखना था कि खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ी खिलाड़ी छात्र–छात्राओं में नियंत्रण की स्थिति में अंतर पाया जाता है या नहीं। प्राप्त अंकों की सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं के नियंत्रण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया गया है

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण ही उसमें शारीरिक, मानसिक, साम्वेबिक एवं सामाजिक गतिविधियों का संचालन अपनी आवश्यकता और क्षमता के अनुसार करता रहता है। उसके द्वारा की गई गतिविधियां जहां तक एक और उसकी सफलता को दर्शाती हे, वहीं दूसरी और उसके कौशल विकास के स्तर को निर्धारित करती है। सफलता और असफलता के बीच कुछ ऐसे सामाजिक मानसिक तत्व हैं जो मानव मन पर दबाव डालते हैं आशा और निराशा के बीच जीवन के स्तर में परिवर्तन लाते रहते हैं। कौलमन ने बीसवीं सदी को चिता का युग कहा है। क्योंकि इस सदी में पारंपरिक प्रथाओं के खिलाफ काफी आवाज उंठी है। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है और इस परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाए रखने के लिए सफलता और असफलता का उत्कृष्ट स्तर पर कार्य को प्राप्त करने के लिए उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने पर निर्भर करता है। यह चुनौती है जहां एक और समय की मांग है वही दूसरी ओर व्यक्तियों के बीच ही जाने वाली बीमारियों को दर्शाती है। खेलकूद इस अपवाद नहीं है क्योंकि इसमें भी खिलाड़ी सफलता पाने के लिए और असफलता से बचने के लिए अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन के बीच खिलाड़ियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए खेल मनोवैज्ञानिक जैसे विषय का उपयोग नितांत आवश्यक है क्योंकि खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके अन्य ऐसे मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर जोर देते हैं इनके माध्यम से वे मानसिक कारणों और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन खेल और खिलाड़ियों के बीच में उत्पन्न एवं अनुप्रयुक्त घटनाओं में कर सके। (Mohan et.al.1986) एक और मनोवैज्ञानिक इस घटना का अध्ययन

Copyright ⓒ 2020 Authors

प्रस्थिति अनुभूति, भावना, व्यक्तित्व एवं व्यवहार के साथ–साथ पारस्परिक संबंधों के रूप में करते हैं वहीं दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक के अंतर्गत प्राणी के गतिविधियों के विभिन्न क्षेत्रों के लिए ज्ञान को संदर्भित करते हैं जिससे व्यक्तियों के जीवन के जुड़े मुद्दे को मनोवैज्ञानिक आसानी से समायोजित कर सके प्राणियों की समस्याओं समाधन कर सके।

वर्तमान समय में खेल की नितांत आवाश्यकता है। प्रतियोगिता के इस आधुनिक युग में खेल में समुह की भावना के साथ–साथ खिलाड़ियों के मनोवैज्ञानिक तैयारी भी अत्यंत आवश्यक है। वह एक और खिलाड़ियों को खेल के कौशल से, खेल की बारीकियों से अवगत कराया जाता है तो वहीं दूसरी ओर खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों को शारीरिक और मानसिक रूप से खेल रही प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करते हैं। खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों को सफल होने के लिए, खेल को जीतने के लिए एवं खेल कौशलों में प्रविणता के साथ–साथ खेल के लिए अभी प्रेरित करने के लिए भी प्रत्यनषील रहते हैं। खिलाड़ियों में खेल भावना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस भावना का प्रदर्शन करके खिलाड़ी खेल के मैदान में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। फिर मनोवैज्ञानिक एक नया संपर्क तो रहा है लेकिन कुछ समय में खेल मनोवैज्ञानिक खिलाड़ियों के प्रदर्शन को बेहतर करने के साथ–साथ उनके अनुशासन एवं आत्म नियंत्रण जैसे प्रत्ययों का भी विकास किया है जिनके बिना खिलाड़ियों का खेल प्रशिक्षण अधूरा रह जाता। खेल में जहां तक एक और प्रतिस्पर्धा एवं टीम भावना अत्यधिक महत्वपूर्ण है वही खेल के माध्यम से खिलाड़ियों में आकांक्षा अभिप्रेरणा और उपलब्धियों को प्राप्त करने की प्रवृति दर्शाते हैं वर्तमान में खेल केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं रह गया है अपितु खेल के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए खिलाड़ियों ने इसे एक व्यवसाय का अवसर के रूप में भी देखा है। यही कारण है कि खेल मनोवैज्ञानिक की उपयोगिता काफी बढ़ गई है। खेल मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक की एक शाखा है जो गतिविधियों और भौतिक संस्कृति की जांच करते हुए खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करता है खिलाड़ियों के लिए नैदानिक तकनीक को विकसित करता है। यही कारण है कि खेल मनोवैज्ञानिकों ने इससे स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हुए एक ठोस संरचना प्रदान की है और खेल मनोवैज्ञानिक के रूप में अपनी भूमिका और कार्य के बारे में सूक्ष्म विश्लेषण किया है। खेल मनोवैज्ञानिक के लिए वैज्ञानिक निर्मित करने में अनुसंधान प्रयास काफी महत्वपूर्ण रहे हैं जिनमें नियंत्रण की स्थिति एक ऐसी स्थिति है जो खेल के लिए अत्यंत आवश्यक है नियंत्रण मनोवैज्ञानिक में एक शब्द है जो किसी व्यक्ति विश्वास के बारे में बताता है कि उसके जीवन में चल रही गतिविधियों किस तरह की हैं। अच्छे और बुरे परिणामों का क्या प्रभाव है। नियंत्रण स्थिति को वोटर द्वारा विकसित किया गया था। इसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करना है। नियंत्रण का अभिप्राय है उस सीमा से है जिस के संबंध में लोगों का मानना है कि मैं उन घटनाओं को नियंत्रित कर सकते हैं जो उन्हें प्रभावित करती है। नियंत्रण के दो घटक है आंतरिक नियंत्रण की स्थिति एवं वाह्म नियंत्रण की स्थिति।

आंतरिक नियंत्रण के तात्पर्य है कि घटनाओं का परिणाम प्राथमिक रूप से स्वयं के व्यवहार से होता है अतः व्यक्ति को अपने अंदर की स्थिति की नियंत्रण करना होता है। यह प्राथमिक रूप से स्वयं के व्यवहार को नियंत्रण से संबंधित होता है। नियंत्रण का दूसरा घटक वाह्म नियंत्रण है जिसके अंतर्गत व्यक्ति वाह्म शत्रु को नियंत्रित करने का प्रयास करता है। ऐसे व्यक्तियों की शक्ति का प्रदर्शन करने की भावना अधिक होती है ऐसे व्यक्ति जो भाग्य व परिस्थिति को मुख्य आधार मानते हैं जिनके द्वारा घटनाएं निर्धारित होती हैं, उन्हें कुछ आंतरिक गुण पाए जाते हैं और अपने व्यवहार को अच्छी तरह से नियंत्रण कर लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों में राजनीतिक व्यवहार अत्याधिक उच्च कोटि का प्रदर्शन

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

होता है और अन्य लोगों को प्रभावित करने की क्षमता भी इनमें अधिक होती है। आंतरिक नियंत्रण जिन व्यक्तियों का अच्छा होता है उन्हें परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता अधिक होती है यही कारण है कि मैं विश्वास करते हैं करते हैं कि उन्हें सफलता जल्दी मिलेगी और उन्हें अपनी स्थिति का पूर्ण ज्ञान होता है और ऐसे व्यक्ति अधिक सक्रिय व्यवहार का प्रदर्शन करते है।

राटर (1966) का मानना है कि आंतरिक नियंत्रण जिन व्यक्तियों को का कुछ होता है उल्लू वातावरण के साथ सामंजस्य करने की उच्च शक्तियों पाई जाती है जिसके माध्यम से वे अपने जीवन के निर्णय करते है को नियंत्रण करते हैं और अपने व्यवहार को सुदृढ बनाते हैं। उन्होंने पुनः आंतरिक नियंत्रण को परिभाषित करते हुए कहा है कि इनमें सामान्य प्रत्याशा अत्याधिक पाई जाती है जिसके माध्यम से व्यक्ति को आत्म नियंत्रण की प्रवृत्ति बढ़ जाती है और वह सुदृढकरण की क्षमता विकसित करता है जिससे सफल प्रयासों को जिम्मेदारी स्वयं लेता है। इसके विपरीत वाह्म नियंतण व्यक्तियों का मानना है कि सुदृढकरण भाग्य,परिस्थिया या कुछ अन्य वाह्म शक्तिशाली बल किसी व्यक्ति को सफलता या असफलता के पीछे जिम्मेदार होते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अत्यंत सुदृढ़ीकरण और व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं की धारणा, एवं लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा, व्यक्तित्व समायोजन एवं समस्या समाधान खुजली की पत्नी के बीच संबंधों की जांच की प्रगति है। कुछ अध्ययनों ने नियंत्रण की स्थिति को विश्वास और नियंत्रण रेखा के बीच संबंधों की जांच माना है अपने शोध में यह पत्र प्रस्तुत किया है कि किशोरावस्था में नियंत्रण परिवर्तनों के नियंत्रण काफी हद तक निर्भर करता है। Sherman (1984) ने अपने शोध में कहा है कि नियंत्रण विश्वास और नियंत्रण विकास के बीच अत्याधिक अध्ययन अंतर अनु भागीय है। Baltes and Nesselroade (1972) ने कि अपने अध्ययन में क्रॉस रिसर्च के माध्यम से यह ज्ञात किया है कि सांस्कृतिक और परिपक्वता के घटकों को परिवर्तित कर नियंत्रण की स्थिति में परिवर्तन किया जा सकता है। उन्होंने अपने अध्ययन में यह भी बताया क्यों एक ऐसा माध्यम नहीं है जिनके द्वारा कारकों पर अनुदैर्ध्य अभिकल्पन को अपनाया गया हो। अपने अध्ययन के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि प्राप्त परिणामों के व्यवहार को परिवर्तित किया जा सकता है जिसके लिए वाह्म नियंत्रण की परिस्थितियां जिम्मेदार होती हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी माना है कि व्यक्ति का आंतरिक नियंत्रण की स्थिति में एवं वाह्म नियंत्रण स्थिती है दोनों रहती है और व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रदर्शन करता है। ऐसे व्यक्ति दिन में आंतरिक की प्रवृती होती है उनमें एक प्रवृत्ति पाई जाती है कि वह अपना सफलताओं के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हैं इसके विपरीत ऐसे व्यक्ति जिनमें वाह्म नियंत्रण की अधिक पाई जाती वह भाग्य या वाह्म परिस्थितियों पर अधिक विश्वास करते हैं। और उनके व्यवहार का निर्धारण ईन्ही परिस्स्थिनियों के आधार पर होता है। आंतरिक नियंत्रण के व्यक्तियों में निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती है–

- ऐसा व्यक्ति काफी सक्रिय होता है जिससे वह परिस्थितियों में सुधार ला सकता है।
- किसी उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए आत्म प्रेरित होते हैं।
- अपने ज्ञान कुशलता एवं क्षमताओं के विकास के लिए कठिन परिश्रम करते हैं।
- वैसे सभी कार्यों को करने में विश्वास करते हैं जिसको करने की उन्हें क्षमता रहती हो।
- वह अपनी शक्तियों की सकारात्मक और रचनात्मक प्रयास करते हैं जिसके अच्छी परिणामों की प्राप्ति हो सके।

Copyright ⓒ 2020 Authors

- आत्म नियंत्रण का आंतरिक नियंत्रण की स्थिति वाले व्यक्तियों में कार्य करने की शैली हमेशा सहभागिता पूर्ण प्रबंधन पर आधारित होती है।

आंतरिक नियंत्रण की स्थिति का दूसरा पक्ष वाह्म नियंत्रण की स्थिति है, भूत की अधिकता से व्यक्ति विनम्र व्यवहार का प्रदर्शन करता है और परिस्थितियों के साथ अपने आप को डालने का प्रयास करता है। वह अपनी सफलता के लिए स्वयं के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों को भी जिम्मेदार समझता है उन्होंने उपस्थिति में उसकी मदद की थी। ऐसी व्यक्ति अपनी सफलता या असफलता का श्रेय स्वयं को बहुत कम लेते है और एक सुखी सुकून भरा जीवन व्यतीत करते हैं। वाह्म नियंत्रण वाले व्यक्ति भाग संयोग या परिस्थितियों से कोई बाहर की शक्तियों द्वारा निर्धारित होते हैं और उनका व्यक्तिगत नियंत्रण से कोई विशेष लेना देना नहीं होता है। अपितु वह परिस्थितियों को अपनी सफलता या असफलता के लिए उत्तरदाई मानते हैं। किसी व्यक्ति में नियंत्रण था या तो आंतरिक स्तर उच्च होगा या नियंत्रण का वाह्म स्तर यंत्र की स्थिती के आंतरिक नियंत्रण वाले व्यक्तियों का मानना है कि उनके कार्यों का उनके जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है और परिणाम अत्याधिक रूप से उन पर ही निर्भर करते हैं। इसके दूसरे शब्दों में हम यह कसते हैं कि वाह्म नियंत्रण वाले व्यक्ति किसी कार्य में घटना के लिए परिस्थिति को उत्तरदाई मानते हैं। ऐसे व्यक्ति आसपास के व्यक्तियों के साथ अत्याधिक सामंजस्य स्थापित कर अपने कार्यों का प्रतिपादन आसानी से कर सकेत हैं। Rotter (1975) नियंत्रण की स्थिति के अंतर्गत आंतरिक और बाह्य स्थिति को दो सातत्व माना जाता है जो घटनाओं के परिणामों को नियंत्रण रखने की प्रवृति से संबंधित होते हैं। जहां एक ओर आंतरिक चुनाव के परिणाम वक्त के आत्म नियंत्रण से संबंधित होते हैं वहीं दूसरी ओर बाहरी घटनाओं के परिणाम को बाहरी परस्थितियों के लिए जिम्मेदार माना गया है।

उद्देश्य (Objectives of the Study)

- खिलाड़ीयों एवं गैर खिलाड़ियों के में नियंत्रण की स्थिति का मापन करना।
- महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों के नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन करना।
- विभिन्न संकाय ओं खिलाड़ियों एवं खिलाड़ियों के बीच नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन करना।
- इंटरमीडिएट एवं डिग्री के खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन करना।

परीकल्पनायें (Hypothesis):-

- खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
- महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया जाएगाझ
- ग्रामीण एवं शहरी खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति में अंतर पाया जाएगा।
- विभिन्न संघों के खिलाड़ियों खिलाड़ियों के बीच नियंत्रण सार्थक अंतर पाया जाएगा।
- इंटरमीडिएट एवं डिग्री के खिलाडियों में नियंत्रण की स्थिती सार्थक अंतर पाया जाएगा।

Copyright ⓒ 2020 Authors

प्रतिदर्श (Sample):-

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श की रचना 200 खिलाड़ियों और 200 गैर खिलाड़ियों (सामान्य छात्र छात्राएं) से की गई है। भाग लेने वाले खिलाड़ियों में इंटरमीडिएट महाविद्यालय, स्तरीय एवं विष्वविद्यालय, स्तरीय छात्र–छात्राएं सम्मिलित हैं। जिनकी आयु का प्रचार पर लगभग 15 से 25 वर्ष है। यहां पर खिलाड़ियों से तात्पर्य छात्र–छात्राओं से है जो महाविद्यालय, एवं विष्वविद्यालय की टीम में खेल के लिए चयनित किए गए हैं। ये खिलाड़ी विभिन्न प्रकार की खेलकूद से संबंधित है। प्रस्तुत शोध में 100 खिलाड़ी छात्र एवं 100 खिलाड़ी छात्राएं ली गई है जो मुख्य रूप से क्रिकेट हॉकी फुटबॉल खेलते हैं। चयनित छात्र–छात्राएं इंटरमीडिएट और स्नातक के थे जो विज्ञान वाणिज्य कला वर्ग से संबंधित थे।

अभिकल्प (Design):-

प्रस्तुत षोध अध्ययन में खेलों का प्रतिनिधित्व स्वतंत्र परिवर्त्य के रूप में और खिलाड़ियों में छात्र–छात्राएं सम्मिलित है इनका चयन इंटरमीडिएट एंव स्नातक छात्र–छात्राओ के रूप में किया गया है। आश्रित परिवर्तण के रूप में नियंत्रण की स्थिति है जिसका मापन किया गया। खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों के प्राप्त अंकों के आधार पर खिलाड़ियों के व्यक्तित्व पैमानों को चित्रित किया गया। खिलाड़ियों तथा गैर खिलाड़ियों का समूह अन्य सभी दृष्टियों से समान रखा गया। चुने गए प्रतिदर्श पर नियंत्रण की स्थिति मापने प्रशासित की गई जिससे खिलाड़ी और चार खिलाड़ियों के बारे में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त किया जा सके।

शोध उपकरण (Research Tools):–

नियंत्रण स्थिति मापनी (Locus of control scale): नियंत्रण स्थिति मापनी का हिन्दी अनुरुपण डॉ. आर . एन . सिंह (2010) द्वारा निर्मित किया गया है। इस मापनी के माध्यम से प्रयोज्य की आंतरिक एवं वाह्य नियंत्रण की स्थिति का मापन किया जाता है । इस मापनी में कुल 40 एकांश है जिनके प्रति प्रयोज्य को हां या नही में अपनी अनुक्रिया व्यक्त करनी है। प्रयोज्य द्वारा व्यक्त की गई प्रत्येक ही अनुक्रिया के लिए एक अंक प्रदान किया गया । इसमें अपनी पर अत्यधिक अंक प्रमोद में बाह्य नियंत्रण की स्थिति को दर्शाता है । इस मापनी का परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक 0.88 एवं अर्ध–विच्छेदी विश्वसनीयता गुणांक 0.86 है। इस मापनी की कसौटी वैधता भी ज्ञात की गई है। जो कि 0.892 प्राप्त हुई है।

परिणाम एवं विवेचन (Result and Discussion)

प्रस्तूत अध्ययन में खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन करने के लिए आकड़ों का संग्रह किया गया। तालिका संख्या एक में खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों का मध्यमान, मानक विचलन एवं t–अनुपात

Copyright ⓒ 2020 Authors

अंकित किया गया। जिस के अवलोकन से स्पष्ट है कि खिलाड़ियों में वाह्य नियंत्रण की स्थिति की प्रवृति अधिक पाई गई।

तालिका –1 खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति पर मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का विश्लेषण:

नियंत्रण की स्थिति के घटक	खिलाड़ी (200) मध्यमान मानक विचलन	गैर खिलाड़ी (200) मध्यमान मानक विचलन	टी–परीक्षण
आंतरिक नियंत्रण की स्थिति	18.80 6.25	14.28 5.92	2.08′
वाह्य नियंत्रण की स्थिति	15.77 4.50	15.9 4.60	2.24′

खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का अध्ययन किया गया। नियंत्रण की स्थिति व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण गुण है। जिस के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार की प्रभावशीलता का मापन किया जाता है। खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का मापन करने के लिए नियंत्रण के घटक को आंतरिक नियंत्रण एवं वाह्य नियंत्रण में विभक्त किया गया है। आन्तरिक नियंत्रण में जहाँ एक ओर व्यक्ति का विश्वास एवं आंतरिक प्रत्यक्षण जैसे कारक उत्तरदायी हैं। वहीं दूसरी ओर वाह्य कारक में व्यक्ति का समय, भाग्य जैसे कारक उत्तरदायी होते है। नियंत्रण की यह स्थिति आंतरिक एवं वाह्य कारकों पर ही निर्भर करती है। रोटर ने आंतरिक नियंत्रण को परिभाषित करने हुए कहा है कि यह एक आंतरिक अनुभव है जिसे महसूस किया जा सकता है। ऐसे व्यक्तियों में जीवन के प्रति महारत की स्थिति रहती है। एवं ऐसे व्यक्ति अपने प्रयासों से निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में काफी हद तक सफल रहते हैं। रोटर (1975) ने अपने शोध में यह भी प्राप्त किया कि जिन व्यक्तियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति अधिक पाई जाती है उनमें नई चुनौतियों का सामना करने की प्रवृति भी अधिक पाई जाती है, उनमें कार्य को सुचारु रूप से करने की अत्यधिक क्षमता होती है। साथ ही वे इतने आत्मनिर्भर एवं आत्म नियंत्रित होते हैं कि किसी आक्रमक व्यवहार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने से बचते हैं उनमें किसी अपरिहार्य परिस्थितियों में उतपन्न तनाव का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से करने की क्षमता भी पाई जाती है।

इस मापनी में कम प्राप्तांक इस बात का सूचक है कि खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति पाई गई है। जिन खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति मापनी पर कम प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं उनमें आंतरिक नियंत्रण की स्थिति काफी अच्छी पाई गई है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि खिलाड़ियों का मध्यमान और मानक विचलन गैर खिलाड़ियों की तुलना में कम पाया गया है। जिससे स्पष्ट है कि खिलाड़ियों में नियंत्रण की आंतरिक स्थिति अच्छी पाई गई है जिस से स्पष्ट है कि खिलाड़ियों में चुनौतियों का सामना करने की प्रवृति अधिक पाई गई है। और उनमें कार्य को सुचारु रूप से करने की क्षमता विद्यमान है। तालिका के अवलोकन से यह भी स्पष्ट है की खिलाड़ी वर्ग के छात्र–छात्राओं में आत्म नियंत्रण काफी अधिक पाया गया है और वे किसी भी आक्रमक व्यवहार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने से बचते हैं और उनमें किसी दुखद परिस्थितियों के साथ साथ आक्रमक परिस्थितियों में भी यदि तनाव उतपन्न होता है तो वह शांतिपूर्णढंग से तनाव का समाधान करने की क्षमता रखते हैं। गैर खिलाड़ी वर्ग के छात्र–छात्राओं में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति कम पाई गई है। जिससे स्पष्ट हो रहा है कि उनमें परिस्थितियों का समाधान करने की क्षमता के साथ–साथ वर्तमान समय में उपलब्ध चुनौतियों का सामना करने में वे स्वयं को असमर्थ पाते हैं। नियंत्रण की स्थिति का दूसरा घटक वाह्य नियंत्रण की स्थिति है। जिस के अंतर्गत प्रस्तूत शोध के प्राप्त अंकों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति काफी अच्छी है और उनमें समस्या का समाधान, चुनौतियों का सामना करने की क्षमता के साथ–साथ विपरीत परिस्थितियों से बाहर आने में भी समर्थता के लक्षण पाए जाते हैं। इससे स्पष्ट है की खेल से खिलाड़ियों का न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ ही सुधरता है। अपितु उनमें परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता भी विकसित होती है। अतः प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना की खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं में नियंत्रण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया जाएगा की पुष्टि होती है। परिणामों से स्पष्ट है की निर्मित परिकल्पना में सार्थक अंतरपाया गया है।

 Copyright © 2020 Authors

तालिका –2

महिला तथा पुरुष खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति पर मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का विश्लेषण:

नियंत्रण की स्थिति के घटक	महिला खिलाड़ी मध्यमान विचलन	मानक	पुरुष खिलाड़ी मध्यमान विचलन	मानक	टी परीक्षण
आंतरिक नियंत्रण की स्थिति	9.77	4.18	13.40	4.12	3.38**
वाह्य नियंत्रण की स्थिति	9.43	4.65	12.40	3.65	2.67**

प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना के क्रम में दुसरे स्तर पर महिला और पुरुष खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति पर मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का विश्लेषण किया गया। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि आंतरिक नियंत्रण की स्थिती महिला खिलाड़ियों में काफी अच्छी पाई गई है जिससे स्पष्ट होता है कि पुरुष खिलाड़ियों की अपेक्षा महिला खिलाड़ियों में आत्मनिर्भरता की प्रवृति अधिक पाई जाती है और साथ ही उनमें ‍चुनौतियों का सामना करने की प्रवृति काफी अच्छी पाई गई है। महिला खिलाड़ियों में संयम और तनाव का समाधान करने की क्षमता भी उच्च स्तर की पाई गई है। प्रस्तूत शोध में चयनित परिकल्पना की महिला और पुरुष खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति में अंतर पाया जाएगा की पुष्टि होती है क्योंकि दोनों के मध्य सार्थक अंतर पाया जा रहा है। इस मापनी पर निम्न प्राप्तांक यह प्रर्दशीत करता है कि महिला खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति पुरुष खिलाड़ियों की अपेक्षा अच्छी पाई गई है और महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों के बीच प्राप्त टी–अनुपात यह यह सिद्ध करता है कि महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों के बीच सार्थक अंतर पाया गया है। महिलाओं में कार्य के प्रति जुड़ाव अधिक होता है और वेजिस भी कार्य को करने के लिए तत्पर होती है। उसे पुरी निष्टा और लगन के साथ करती है। प्रस्तूत शोध से भी इस तत्य की पुष्टि होती है। **रोटर** (1960) में इस पर अन्वेषण करते हुए कहा कि लोग जैसा व्यवहार करते हैं उनके व्यक्तित्व का निर्धारण भी उसी पर निर्भर करना है। नियंत्रण की स्थिति किसी व्यक्ति की ऐसे व्यवहार को निर्धारित करनी है जिस के माध्यम से हम उसके व्यक्तित्व का प्रेक्षण करने हैं और आंतरिक और बाह्य रूप से उसकी तत्परता को निर्धारित करते हैं। आंतरिक नियंत्रण की अधिकता से इस बात की पुष्टि होती होती है कि महिला खिलाड़ियों कठिन परिश्रम करने की क्षमता विद्यमान हैं और वे खिर्णय लेने की क्षमता भी रखती है जिससे किसी भी परिस्थिति में वे तत्काल खिर्णय लेने में क्षम होती है।

तालिका–3

ग्रामीण एवं शहरी खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति पर मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का विश्लेषण:

नियंत्रण की स्थिति के घटक	ग्रामीणों क्षेत्र के खिलाड़ी मध्यमान मानक	विचलन	शहरी क्षेत्र के खिलाड़ी मध्यमान मानक	विचलन	टी–परीक्षण
आंतरिक नियंत्रण की स्थिति	9.5	14.2	11.4	3.48	3.25*

Copyright ⓒ 2020 Authors

वाह्य नियंत्रण की स्थिति	10.21	3.57	9.25	3.22	1.869*

प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना ग्रामीण एवं शहरी खिलाड़ियों में नियंत्रण की स्थिति का अवलोकन किया गया। परिणाम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति मजबुत अर्थात नियंत्रण की स्थिति के दो पक्ष आंतरिक और बाह्य नियंत्रण के बीच ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों में खेल के प्रति उनमें समर्पण का भाव ज्यादा पाया गया जिससे उनमें परिस्थितियों के साथ अपने को परिमार्जित करने की क्षमता विद्यमान रही। इसके साथ ही शहरी क्षेत्र के खिलाड़ियों के विपरीत ग्रामीण परिवेश में खिलाड़ियों में लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रवृति अधिक पाई गई। उनमें कठिन परिश्रम करने की क्षमता विद्यमान थी। जिसके कारण वह अपनी योग्यता और कौशल को विकसित कर सकें। ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों पर मध्यमान और मानक विचलन आंतरिक नियंत्रण की स्थिति पर कम प्राप्त हुआ है जिससे स्पष्ट है, मुझे अपने भविष्य के प्रति सकारात्मक ग्रुप से विचारों को अपनाते हुए कार्य करते हैं, टीम भावना को अपनाते हुए अपने खेल में सामुहिक रूप से प्रर्दशन करते है। जिससे उनके खेल में काफी उत्कृष्टता पाई जाती है और जिन खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति काफी अधिक पाई जाती है उनमें सफल होते की प्रवृति भी अधिक पाई जाती है। तालिका नम्बर–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है ग्रामीण एवं शहरी खिलाड़ियों के नियंत्रण की स्थिति के आधार पर उनमें ग्रामीण परिवेश के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति उच्च पाई गई है क्योंकि इस मापनी पर कम प्राप्तांक उच्चता का द्योतक है। अतः ग्रामीण परिवेश के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति अत्यधिक पाई गई है और निर्मित परिकल्पना की पुष्टि इस आधार पर होती है कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के खिलाड़ियों में आंतरिक एवं बाह्य नियंत्रण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया जाएगा और यह अंतर 0-01 सर पर सार्थक पाया गया है।

तालिका–4

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों के बीच मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात का अध्ययन

घट क कला वर्ग के खिलाड़ियों का मध्यमान का विचलन	मानक विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों का मध्यमान				टी–परीक्षण
	मानक	विचलन	मानक	विचलन	
आंतरिक नियंत्रण की स्थिति	9.51	4.2	11.4	3.48	3.255*
वाह्य नियंत्रण की स्थिति	11.62	2.21	9.12	3.21	5.31*

तालिका–4 के अवलोकन से स्पष्ट है कला और विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों के बीच आंतरिक नियंत्रण की स्थिति में यह देखा गया कि कला वर्ग के खिलाड़ियों में उच्च कोटि की आंतरिक नियंत्रण की स्थिति पाई गई है जबकि विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति अच्छी नही पाई गई है। किंतु उनके बीच प्राप्त टी अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। कि मे लक्ष्य के प्रति उन्मुक्त अधिक पाई जाती है और उनमें नियंत्रण की भावना भी अधिक पाई जाती है इसके साथ ही विपरीत परिस्थितियों में भी उनमें सही दिशा का चयन करने की क्षमता पाई जाती है विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों की अपेक्षा उनमें वास्तविता के साथ समायोजन करने की क्षमता अधिक पाई जाती है

Copyright ⓒ 2020 Authors

जिससे वह अपने कार्य और योग्यता को प्रभावशाली ढंग से परिभाषित कर सकते हैं। कला वर्ग के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति का पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि उनमें खेल के प्रति समर्पण की भावना अधिक है और वह खेल को आत्म नियंत्रण और संयम के साथ खेलते है इससे स्पष्ट है कि प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना कला और विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों के बीच सार्थक अंतर पाया जाएगा की पुष्टि होती है। प्रस्तूत शोध में कला और विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों के 2 टी–अनुपात ज्ञात किए गए हैं। जिनमें एक आंतरिक नियंत्रण की स्थिति का है और दुसरा वाह्य नियंत्रण की स्थिति का है। जिनमें कला वर्ग के खिलाड़ियों का आंतरिक नियंत्रण की स्थिति पर कम प्राप्तांक इस बात की पुष्टि करता है कि उनमें उतर के आंतरिक नियंत्रण की क्षमता विद्यमान है इसके विपरीत विज्ञान वर्ग के खिलाड़ियों में वाह्य नियंत्रण की स्थिति पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त हुआ है जिससे स्पष्ट है कि उनमें वाह्म गुणात्मक क्षमताएं रहस्यमय परिस्थितियों को नियंत्रित करने की क्षमता विद्यमान है और वह खेल को एक मनोरंजन के साधन के रूप में लेते है। न कि सफलता और असफलता के मापदंडों पर । वाह्य नियंत्रण की मात्रा की अधिका यह स्पष्ट करती है कि ऐसे खिलाड़ियों में अस्था और विश्वास अधिक होता है और वह हार जीत को वाह्म कारकों का परिणाम मानते हैं

तालिका–5

इंटरमीडिएट एवं डिग्री के खिलाड़ियों के बीच मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात का अध्ययन

घटक	मानक	विचलन	मानक	विचलन	टी अनुपात
आंतरिक नियंत्रण की स्थिति	8.76	4.19	7.84	4.04	1.57
बाह्य नियंत्रण की स्थिति	13.04	2.31	12.80	2.10	0.76

तालिका–5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि नियंत्रण की स्थिति का अवलोकन इंटरमीडिएट और डिग्री के खिलाड़ियों के बीच किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण की स्थिति वाह्म नियंत्रण की अपेक्षा उच्च पाई गई। इंटरमीडिएट के खिलाड़ियों में वाह्य नियंत्रण अत्यधिक पाया गया जिससे स्पष्ट होता है कि इंटरमीडिएट के छात्र–छात्राओं जो कि खेलकूद में थे। उनका मानना था कि वे वाह्म नियंत्रण के माध्यम से वह परिस्थितियों के आधार पर कार्य करते थें। उनका यह भी मानना था कि व्यक्ति परिस्थितियों के परिणाम स्वरुप ही किसी कार्य का निष्पादन करता है। उसके द्वारा जो भी कार्य किए जा रहे हैं वह भाग्य द्वारा पूर्व निधारित होता है और उसमें उनका कोई विशेष योगदान नही होता। मिलनपुर की स्थिति का अवलोकन करने के लिए इंटरमीडिएट एवं स्नातक के खिलाड़ियों के बीच आंतरिक और वाह्य स्थिति का अलग–अलग अवलोकन किया गया और उनके बीच टी–अनुपात की गणना भी की गई। तालिका नमंबर 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राप्ती अनुपात जो कि इंटरमीडिएट एवं डिग्री खिलाड़ियों के बीच आंतरिक और वाह्य स्थिति के नियंत्रण पर आधारित है उनके मध्य सार्थक अंतरिहीं पाया गया । अतः प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना की इंटरमीडिएट एवं स्नातक स्तर के खिलाड़ियों के बीच सार्थक अंतर पाया जाएगा की पुष्टि नही हो पाई। उनके बीच प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन में अंतर स्पष्ट दिख राहा है किन्तु सार्थकता स्तर में किसी भी प्रकार का अंतर प्रतीत हो रहा है जिससे स्पष्ट हो रहा है कि नियंत्रण की

 Copyright ⓒ 2020 Authors

स्थिति के अंतर्गत आंतरिक और वाह्य नियंत्रण के बीच इंटरमीडिएट और स्नातक के खिलाड़ियों के बीच अंतर नहीं पाया गया है इससे स्पष्ट होता है कि खिलाड़ियों के व्यक्तित्व पर उनकी कक्षा एवं शैक्षिक स्तर का प्रभाव पड़ता है अपेक्षाकृत उनके व्यक्तिगत गुणों एवं मनोवृति के।

प्रस्तूत शोध में खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं में नियंत्रण की स्थिति का अवलोकन किया गया है। जिस के अंतर्गत पांच परिकल्पनाए निर्मित की गई हैं। इनमें महिला एवं पुरुष खिलाड़ी, एवं गैर खलाड़ी एवं कला एवं विज्ञान वर्ग के खिलाड़ी के साथ–साथ, इंटरमीडिएट एवं स्नातक वर्ग के खिलाड़ियों का अवलोकन किया गया है। लेकिन प्रस्तूत शोध में यदि विश्वविद्यालय स्तरीय, राज्य स्तरीएवं राष्ट्र स्तरीय खिलाड़ियों का चयन किया जाता तो परिणाम काफी हद तक सार्थक प्राप्त होते शोध विधि में सार्थका स्तर के साथ–साथ यदि चयनित सभी प्रतिदर्श के बीच हम सहसंबंध की गणना करते तो यह भी स्पष्ट हो जाता के प्रस्तूत शोध में निर्मित परिकल्पना के बीच अंतर की सार्थका ज्ञात होते के साथ–साथ उनके बीच किस तरह का संबंध है। यह भी पूर्ण रूप से स्पष्ट रहता।

अध्ययन की साथाकिा–

प्रस्तूत शोध से प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि यह अध्ययन खेल जगज के लिए काफी लाभकारी सिद्ध होगा जिसमें खिलाड़ियों, मनोवैज्ञानिक विश्लेषक, कोच, शारीरिक हेतु निर्धारित षिक्षकों के लिए भी काफी महत्वपूर्ण होगा क्योंकि इसके माध्यम से खिलाड़ियों के परिवेश एवं उनके नियंत्रण की स्थिति का अवलोकन किया जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

वर्तमान शोध में खिलाड़ियों एवं गैर खिलाड़ियों के बीच नियंत्रण की स्थीति का अवलोकन किया गया । (Benassi; Sweeney & Dfuour; 1988; Maltby; Day & Macaskill; 2007) ने अपने शोध में वर्णित किया के आंतरिक नियंत्रण जैसे कि सेंटर ने भी भी नियंत्रण को दो वगों में विभाजिन किया है आंतरिक एवं बाह्य नियंत्रण के माध्यम से व्यक्ति उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रति प्रेररि होता है । उन्हों आंतरिक अभिप्रेरणा को ऐसी अभिवृति माना है जिससे व्यक्ति की आंतरिक अभिक्षमता, प्रयास एवं कठिन लक्ष्य निर्धारण के प्रति तत्पर रहता है इसके विपरीत वाक्य नियंत्रण के अंतर्गत व्यक्तियों में वाह अस्थाई कारण जैसे भाग्य, परिस्थीतियां एवं अन्य ऐसे कारक सममिलित होते हैं जिनके कारण व्यक्ति अपने कार्य को निर्धारित करता है । प्रस्तूत शोध में यह भी अध्ययन किया गया के नियंत्रण की स्थीति के अध्ययन से व्यक्ति के सामाजिसक और सासंथकृतिक परिवेश का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे ग्रामीण पररवेश के खिलाड़ियों में आंतरिक नियंत्रण अधिक पाया गया जिसका कारण है कि वह शारीररक श्रम अधिक करते हैं और उनमें आत्म नियंत्रण की प्रवृति अधिक पाई जाती है। इसके साथ ही महिला खिलाड़ियों में पुरुष खिलाड़ियों की अपेक्षा आंतरिक नियंत्रण अधिक पाया गया जिसका कारण है कि भारत लड़कियों की परवरिश इस आधार पर की जाती है कि उनको नियंत्रित परररस्थीति में रखा जाता है यही कारण है कि उनमें किसी भी कार्य को चुनौनी के रूप में स्वीकार करने की प्रवृति पाई जाती है इसके साथ ही उनमें कार्य के प्रति लगन एवं तल्लीनता अधिक पाई जाती है । (Schmech et-al- 1982; Gadzelia et-al- 1987; Astilla] 1991 ;) ने भी अपने अध्ययनों में पाया के जिन खिलाड़ियों में आत्मनिर्भरता की प्रवृति के साथ– साथ नियंत्रण की प्रवृति अधिक पाई जाती है उनके सफल होने के प्रतिशिति में भी वृद्धि होती है। परिणामों के आधार एवं उनके विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है के खिलाड़ियों में आंतरिक

 Copyright ⓒ 2020 Authors

नियंत्रण की प्रवृति अधिक पाई जाती है और ऐसे खिलाड़ीं जिनके आंतरिक नियंत्रण अधिक पाया जाता है उन में सफल होते का प्रतिशिति भी काफी अधिक पाया जाता है । प्रस्तूत शोध के आलेख में प्रस्तूत अन्य शोध भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि जिन में आंतरिक नियंत्रण अधिक पाया जाता है ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व उतपन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होता है । उनमें आत्म नियंत्रण के साथ– साथ कार्य को सुचारु रूप से करने की क्षमता होती है और वे तनाव एवं प्रतिस्पर्धा का समाधान करने में सक्षम होते हैं ।

संदर्भ सूची (References)

- Anderson, C.R. et.a (1977). Managerial response to environmentally induced stress. Academy of management journal, June, 260-272.
- Bandera, A. (1982) self-efficacy mechanism in human agency. American psychologist,37,122-147
- Baljeet Singh and Dolly (2004). yoga asanas and physical fitness of college level players in relation to their sports performance. Journal of Sports Science, N.S., NIS. Patiala, Vol-27 Biggs, J.B. and Das, J.P. (1973). Extreme response set, internality- externality and performance.
- British Journal Of Social Clinical Psychology, 12, 199-220.
- Cosigner, S.C. (2000). Theories of personality. Print Hall
- Eliza Kundu (2011). Physical activity: motivation and adjustment among rural and urban sports man.
- Fogelman, L. (2012). Do rituals really help athletes? Expert sports performance. Com
- Hegland, S.M. and Gallegos, I. (1983). Developmental aspects of locus of control in preschool children. Journal of genetic psychology. 143,219-229.
- Michel, W. et.al.(1974). Internal external control and persists nce. Validation and implications of the Stanford pre-school internal- external Scale. Journal of personality and social psychology, 29, 265- 278.
- Rotter, J.B. (1975). Some problems and misconceptions related to the constructor of internal vs external control of reinforcement. Journal of Consulting and clinical psychology, 43, 56-57.
- Rotter, J.B. (1990). Internal versus external control of reinforcement. American psychologists. 45,489-493.
- Singh, R.N. and Bhardwaj, S. (1994). Locus of control scale. Prasad sycho Corporation Varanasi.
- Singh, R.N. (1994). Some socio- organizational correlates of the locus of control. the Purvanchal journal of human relations,Vol.3,June

 Copyright ⓒ 2020 Authors